श्री गोपीनाथ आध्यात्मिक संस्थान का मुखपत्र

Regd - GUJMUL00665

यथार्थ मार्ग

Email : info@gopinathji.org Visit us : www.gopinathji.org facebook : ShreeGopinathji Whatsapp - 8141054545

वर्ष – प्रथम • अंक – ५ मई २०१८ • शुल्क मासिक २०/ वार्षिक २००/ विदेश – USA $ 35, UK £ 30 • कुल पृष्ठ ८ पृष्ठ क्रं. १

संस्थापक एवं मार्ग दर्शक – पुष्टि सिद्धान्त मर्मज्ञ पू श्री व्रजेश कुमारजी शास्त्रीजी सम्पादक – वेदान्ताचार्य पू.श्री गिरिराजजी शास्त्री

सम्पादकीय

श्री गिरिराजजी शास्त्री

परिवर्तन शील जीवन को ध्यान में रख कर धर्म मर्मज्ञ और उच्चासीन विद्वतजनों की जिम्मेदारी बन जाती है कि जन मानस में धर्म को आरूढ.करने उचित मार्ग दर्शन प्रदान करें और सही दिशा में निर्देशित करें।

धर्म परायण का चरित्र और सामर्थ्य एक दूसरे के पूरक होते हैं। उत्तम चरित्र से विचारों की उत्तमोत्तमता और दृढता का प्रादुर्भाव जीवन की कठिनाइयों में भी स्थिरता प्रदान कराता है। कितने ही अवसरों पर मात्र दृढता के अभाव में ढुलमुल रवैया अपनाने से स्वयं को ही नहीं अपितु समाज को भी गंभीर क्षति पहुंचा जाते हैं जो आने वाली पीढियों में रूढि के तोर पर चलती चली जाती है। कोई इनका विश्लेषण भी नहीं करना चाहता कि किन परिस्थितियों में किन विशेष कारणों से किस रीति की अनुमति दी गई थी और क्या वह सर्व आधारित थी या मात्र किसी एक के लिए ही थी। गीताजी में भी भगवान ने जो उपदेश दिये वो सभी अर्जुन के लिए नहीं कहे गए बल्कि भिन्न भिन्न परिस्थिति और मन:स्थिति के लिए अलग अलग कहे हैं। मात्र देखादेखी का अनुकरण किसी काम का नहीं, इस प्रकार तो कहीं नहीं पहुंचा जा सकता।

मूल सिद्धांत और सिद्धांत के पीछे का मर्म समझना, उसे सही अर्थो में प्रस्तुत करना और यह सुनिश्चित भी करना कि जो समझा गया वह यथार्थ खंड खंड तो नहीं हुआ, अति आवश्यक है। क्योंकि जो कहा गया वह उसी रूप में सुना जाऐ तभी काम का है। मनमाने ढग़ से ग्रहण करने पर अनर्थ ही होता है। अर्थात केवल भाषा ज्ञान और विवादित विस्तृत विवेचनों से काम नहीं चलेगा, साश्वत सनातन धर्म में जिसकी जितनी सूक्ष्म, सत्याधारित, उदार और विशाल दृष्टि होगी वह उसे उतनी ही स्पष्टता से प्रस्तुत करेगा। तत्पश्चात यह सभी की स्वयं के प्रति जिम्मेदारी है कि वह अपने यथार्थ को पहचान कर उस मार्ग के लिए अनुकूल पद्धति को अपना कर जीवन का श्रेष्ठ प्राप्त कर सकते हैं।

आचार्य वचनामृत

पू.पा. श्रीगोस्वामी कनैयालालजी महाराजश्री

वर्णा श्रम धर्म और वल्लभ सम्प्रदाय : – वल्लभ संप्रदाय को लोग पुष्टि संप्रदाय के नाम से जानते हैं। अधिकतर लोगों में यह भ्रमणा है कि वल्लभ संप्रदाय में आचार्य श्रीवल्लभ ने पुष्टि भक्ति का स्वरूप बताया और उसे ही प्रवर्तित किया। परंतु आचार्य श्रीवल्लभ के निबंध शास्त्रार्थ प्रकरण, सर्व निर्णय प्रकरण और ब्रह्मसूत्र के अणु भाष्य तथा पूर्व मीमांसा भाष्य में कर्म मार्ग 'शा भक्ति कर्म मार्ग ', ज्ञान मार्ग विहित भक्ति मार्ग और निष्काम पूजा मार्ग को भी प्रवर्तन किया हैं। आपश्री ने गीतोक्त शरणागति के मार्ग को भी स्वीकार है। इस बारे में श्री आचार्य चरण का मत है कि इन सभी मार्गो पर भगवान श्री कृष्ण का आश्रय अनिवार्य हैं और ये सभी मार्गो पर वर्णाश्रम धर्मका अनिवार्यत्व बताया है। पुष्टि भक्ति में भी साधन अवस्था में यानि भगवान में प्रेम होने के पहले की अवस्थामें वर्णाश्रम धर्म की अनिवार्यता बतायी है। साधन अवस्था में शास्त्रोक्त साधन भक्ति यानि कि विहित भक्ति जिसे लोग मर्यादा भक्ति कहते हैं वो बिना वर्णाश्रम धर्म के पालन किये नहीं हो सकती। उसी तरह प्रेम से पहले की अवस्था मे भी वर्णाश्रम धर्म आवश्यक है और ये पुष्टि भक्तिमें सनातनियौं केअलावा अन्य को भी अधिकार है। पर उन्हें सांप्रदायिक और शास्त्रोक्त दीक्षा नहीं लेकर सिर्फ शरण मंत्र से ही पुष्टि भक्ति का अधिकार दिया गया है।

प्राचीन भारत मे वैदिक धर्म प्रबल था। परंतु भगवद इच्छा से भगवान बुद्ध के प्रागट्य के बाद वैदिक धर्म लुप्त सा हो गया और बुद्ध और जैन धर्म के अनुयायी बढऩे लगे परंतु वे लोग भी मानवसहज काम, क्रोध, लोंभ, मोह, मद, मात्सर्य से ग्रस्त हो गये। इसलिए भगवान श्री कृष्ण की इच्छा से भगवान शंकर का शंकराचार्य के रूप में प्रागट्य हुआ इसीकारण वैदिक धर्म का पुन: उत्थान हुआ। बहुत से लोग बौद्ध और जैन धर्म की असर से निकल नहीं पाये। ग्यारवी सदी में मुग़ल और मुसलमान का भारत वर्ष में प्रवेश हुआ और उनके सामने सभी सनातनी राजा पराजित हुए या शरणागत हो गये। बारहवी सदी में रामानुजाचार्य और मधवाचार्यजी ने दक्षिण भारत मे वैदिक धर्म और वैष्णव धर्म का पुन: उत्थान किया और अभी भी दक्षिण भारत के आलावा अन्य प्रांतो में सनातनी राजा मुस्लिमो के शरण जाने लगे। उसका मुख्य कारण था अहिंसा का प्रभाव। विक्रम संवत १५३५ में श्रीवल्लभाचार्यजी का प्राकट्य हुआ और उन्होंने उत्तर भारत में वैदिक धर्म, वर्णा श्रम और पुष्टि भक्ति के ध्वज को उत्तर भारत में लहराया। आप श्री ने कहा कि जब तक देह का अभिमान है तब तक वर्णा श्रम धर्म अनिवार्य है। इसी वजह से सनातन राजा राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश आदि में पुन: प्रभुरत हो गये। ये वर्णा श्रम का लोप आज भी दिख रहा है।

वर्णा श्रम धर्म क्या है ?वर्णा श्रम धर्म गीताजी में भगवान स्वयंम कहते हैं कि उन्होंने बनाया है तो इनका ज्ञान स्मृति आदि इस में भरा पडा है। चार धर्म जो शास्त्रों ने कहे हैं वो यह हैं- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, और चार आश्रम ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम और सन्यासाश्रम। चारो वर्ण के साथ प्रत्येक वर्ण के आश्रम धर्म अलग अलग होते हैं। भक्ति वो आत्मधर्म है और वर्णा श्रम धर्म देह का धर्म है। षोडष ग्रंथ अतर्गत भक्ति वर्धिनी में बताते हैं कि भक्ति का बीज यदि दृढ करना है तो घर में यानि की निजगृह में अव्यावृत होकर भगवान श्री कृष्ण की सेवा नवधा भक्ति से करना चाहिए। और यदि नहीं निभा सकती है तो आचार्य के गृह में या अन्य भगवदीय वैष्णव के घर जाकर करनी चाहिए। और ये भी यदि ना निभे तो वर्णाश्रम धर्म का पालन करते हुऐ तीर्थयात्रा अथवा तीर्थवास अथवा जहाँ भी पूजोत्सव होता हो वही जाना चाहिए। श्री वल्लभाचार्य सवर्निर्णय में (निबंध में) कर्ममार्ग और वणाश्रमीयों की पुष्टि भक्ति को मर्यादा भक्ति का स्वरुप बताते हैं। वर्णाश्रम वताम् धर्म (सवर्निर्णय- निबंध) से ये बात समझाते हैं। अविहित पुष्टि भक्ति प्रेम होने के बाद होती है।

पुष्टि भक्ति में भगवान ही फल हैं ऐसा मान कर करी जाती है। नवधा भक्ति उसकी साधन रूपा है। मर्यादा भक्ति भगवान को मोक्ष दाता मान के की जाती है। और प्रवाही की भक्ति मोक्ष की कामना से की जाती है। श्री महाप्रभु वल्लभाचार्यजी को प्रिय पुष्टि भक्ति है, वो साधन अवस्था में वर्णा श्रम धर्म का पालन करते हुऐ करनी चाहिए।

यथार्थ

श्री गिरिराजजी शास्त्री

क्या है यथार्थ ? और क्यों आवश्यक है अब ?

जिन जिन लोगों ने सिर्फ क्रियाकांड को ही धर्म मान कर उस पर ही ध्यान दिया मात्र और अनुभूति के विषय को नगण्य कर दिया वह धर्म और आध्यात्मिकता को अपने अन्दर अस्त कर सत्य-प्रेम-सहजता के साथ यथार्थ को खो देते हैं परम आनंद तो दिवा स्वप्न बन जाता है तथापि लोग अपनी भ्रमणाओं को ही सत्य मूल मान कर अलग ही दुनिया में जैसे घूमते रहते हैं और उस कारण एक जटिलता (झक्कीपन) जिसे जड़ता भी कहेंगे, इंग्लिश में उसे RIGID कहते हैं वह आने से नया सीखना समझना या विचार व्यवहार और जीवन प्रणाली में परिवर्तन नहीं के बराबर हो जाता है और आप जानते ही होंगे कि जिनमें परिवर्तन नहीं होता वह निष्प्राण हो जाते हैं। ऐसे निष्प्राण लोग ही अपने पूर्वग्रहों को श्रेष्ठ सिद्ध करने में लड़ाई झगडे करते हुए अपनी प्रणाली या स्वयं की पद्धत्ति अयोग्य है वह मानने को तैयार ही नहीं होते और मूल स्वामी प्रेम-आनंद रूप सत्य इश्वर को छोड़ कर सांसारिक मनोकामनाओं की छोटी क्षुद्र विषयों की पूर्ति के हेतु ही भगवान को अपने घर में ढेर सारी मूर्ति स्वरुप आकार में बिराजमान कर मन माने ढंग से घरों में एकसाथ पूजते हैं कि शायद ये नहीं तो वो वाले देवता भगवान या इश्वर हमें कुछ दे दे या हमारा ध्यान रख ले, जैसे एक व्यक्ति किसी के यहाँ मजदूरी कर के पूरे दिनभर की मजदूरी मांग लेता है स्नेह से जुडा नहीं रहता वैसे ही हम साधना को समझ लेते हैं तो कैसे यथार्थ समझ आये ?? और कैसे यथार्थ मार्ग पर चल कर उस परम प्रेम रूप परमानंद को प्राप्त कर सकते है या हमारे लिए उनके हृदय में स्नेह जगा सकते हैं ??

એકાદશ સ્કંદ સુબોધની

- પ્રવક્તા -

પૂ.પા.ગો શ્રીચન્દ્રગોપાલજી મહારાજશ્રી, વડોદરા

આ પરિહાર્યથી વિષય છે. જે ઉત્પન્ન થયેલો છે તે મરવાનો છે, મર્યો છે તે ઉત્પન્ન થવાનો છે પણ જે આમાં જે એટલુ અધ્યાહાર છે. જે જન્મ્યો તે મરવાનો છે. જે એમ માને છે કે હું જન્મ્યો એજ એમ માનવાનો છે કે હું મર્યો પરંતુ જે એમ નથી માનતો કે હું જન્મ્યો તેને હું મર્યો કે મરવાનો છું એવુ માનવાની તેને જરૂરીયાત પણ રહેતી નથી જે માને છે કે હું ઉપર ગયો તેને નીચે આવવાનું કેવીરીતે ઉપર ગયો ? સૌથી પહેલા ઉપર એટલે શુ ? આ એક ચર્ચા વિષ્ણુ પુરાણની અંદર ખૂબ સુંદર રીતે આપી છે.

ઋણ અને નિનાદ એમાં ગુરૂ અને શિષ્યની વાર્તા છે કોઇ કારણથી સમર્થ ગુરૂનો શિષ્ય હોવા છતાં પણ શિષ્ય ગુરૂથી જુદો પડી ગયો અને સંસારમાં રગ દોળાઇ ગયો. પણ ગુરૂ એનુ નામ કે જે દરેક રીતે શિષ્યનું કલ્યાણ કરે. ગુરૂએ નક્કી કર્યું કે મારે આનું કલ્યાણ કરવું છે. એટલે ગુરૂજી વેષ બદલી પોતાની યોગવિદ્યા થી પોતાના શિષ્ય પાસે પહોંચ્યા જ્યાં એ શિષ્ય રાજાની સવારી જોવા ઊભો રહેલો જેણ આપણા વડોદરામા ગણેશજીની સવારી નીકળે અને આપડે જોવા ઉભા રહીએ તેવી રીતે પેલો શિષ્ય જોઇ રહ્યો હતો અને આનંદ લઈ રહ્યો હતો તેની આગળ જઈને ગુરૂઉભા થઈ ગયા. આગળ ઉભા રહ્યા એટલે શિષ્યએ કહ્યુ એ ભાઈ એ કાકા જરા બાજુ પર થાવ મને જોવા દો. હા ભાઈ, હું જાઉ પણ તમે શુ જોઈ રહ્યા છો ? ગુરૂજીએ પુછ્યુ શિષ્ય ગુરૂને ઓળખી શક્યો નથી. તેણે કહ્યું ખબર નથી પડતી, આંધળો છે ? રાજાની સવારી જઈ રહી છે તે જોઈ રહ્યો છુ. ગુરૂએ કહ્યુ ભાઈ મને ખબર ના પડી. સવારી એટલે શું ? પેલા શિષ્યે કહ્યુ અલા ગાંડા તને આટલુય ખબર નથી ? રાજા, હાથી પર બેઠેલો હોય તેનું નામ સવારી એમ ? તો રાજા એટલે શુ ? અને હાથી એટલે શુ ? જો કે આ બધી ગાંડી વાતોની અંદર પણ રહેલુ એક ડહાપણ. ઘણીવાર આપડે ડાહ્યા લોકો, ડહાપણમાં પણ ગાંડપણ કરી દેતા હોઈએ છીએ. ઘણીવાર ગાંડા માણસો, અભણ માણસો ગાંડપણમાં પણ એટલી ડાહપણની વાતો કહી દેતા હોય છે. જે જ્ઞાનીઓ ન કહી શકે. રાજા એટલે શુ ? ને હાથી એટલે શુ ? પેલાએ રાજા વિષે સમજાવ્યુ કે જેણે આવો વેષ પહેરેલો હોય, માથા પર મુગટ પહેરેલો હોય તે રાજા કહેવાય, તલવાર હોય ધનુષ્યબાણ હોય તે રાજા કહેવાય ? એમ અને હાથી ? એટલે હાથીનું પણ રૂપ બતાવ્યુ આવી સૂંડ હોય, આવા કાન હોય, પેલાભાઇએ ફરીથી પ્રશ્ન પૂછ્યાં ભાઈ, બધુ ખરૂ પણ આમા રાજા કોણ અને હાથી કોણ ? પેલો શિષ્ય તો જોવામા મશગુલ હતો એટલે તેણે કહ્યુ જે ઉપર છે તે રાજા અને નીચે છે તે હાથી. એટલે ગુરૂજીએ પાછો પ્રશ્ન પુછ્યો. ઉપર એટલે શુ ? અને નીચે એટલે શું ? એપણ સમજાવ હવે પેલો કંટાળી ગયો, કંટાળ્યો ને એટલે ચીડમાં ને ચીડમાં, ગુસ્સામાં ને ગુસ્સામાં, પેલા માણસના ખભા પર ચડી ગયો અને કહ્યુ જો, હું છુ રાજા ને તૂ છે હાથી એમ તો તમે તો મને સામે બતાવેલો ? આટલી ચર્ચા પછી હું ઉપર છુ અને તમે નીચે છો. ઉપર હોય તે રાજા અને નીચે હોય તે હાથી. હવે શિષ્યને કંઈક ખ્યાલ આવ્યો. આ ગાંડપણ માં પણ કંઇક ડહાપણ છુપાયેલુ છે. ઉતર્યો નીચે અને પૂછયુ તમે કોણ છો ? સાચી વાત બોલો. ત્યારે ગુરુજી પોતાના અસલ રૂપમાં પ્રગટ થયા બેટા એજ જ્ઞાન આપવા હું અહી આવ્યો છુ. ઉપર અને નીચે એ આપડી અવિદ્યા છે. અજ્ઞાન છે, આપણો સન્નિપાત રૂપ વ્યવહાર છે વરના ઉપર અને નીચે શું ? કોઇ સાયન્ટીસને જઈને પૂછો ? આ પ્રશ્ન મેં બોંબેમાં નાર્લિકરને પૂછેલો. મને એક જવાબ આપો ઉપર અને નીચે એટલે શું ? મહારાજશ્રી આ સ્પેસમાં ઉપર અને નીચે જેવુ કાંઇ છેજ નહી. સ્પેસ એક એવી વસ્તુ છે જેમાં ઉપર કે નીચે એવું કાંઇજ કહી શકાય તેમ નથી છંતા પણ આપડે ઉપર કે નીચે એવુ કહેવુ હોયતો એક પોઇન્ટથી નક્કી કરવો જરૂરી છે. એક પોઇન્ટ મૂકી ને આ પોઇન્ટથી ઉપર અને આ પોઇન્ટથી નીચે. જે પોઇન્ટ છે તેજ અવિદ્યા. આજ ભેદ પાડે છે ઉપર અને નીચે વર્ના સ્પેસમાં ઉપર-નીચેનો કોઇ ભેદ રહેલો નથી ત્યારે અવિદ્યા સૌ પ્રથમ આપણે દેહ નામનું, હું શરીર છું એવુ ભાન કરાવે છે. એજ તમને મોહમા નાખે છે. વ્યા મોહ કર્યો એણે – કે તમે તમારી જાતને ભૂલી ગયા કે હું એક અંશ છુ તે ભૂલીને તમે એમ માનતા થયા કે હૂં એક શરીર છુ. આવીરીતે બધાજ લઇ લેવાના છે.

હવે આ પાંચ અવિદ્યા છે – દેહધ્યાસ, પ્રાણાધ્યાસ, ઇન્દ્રીયાધાસ, અંતઃ કરણાધ્યાસ અને સ્વરૂપની વિસ્મૃતિ. આ પાંચ વસ્તુ ક્રમશઃ તેની દવા અલગ અલગ છે. જીવને પાંચ રોગ લાગ્યા છે તેનો મતલબ એ થયો. ડો. પાસે ગયા. ડો. કહે એક કામ કરો, તમારી આંખે કમ દેખાય છે એટલે આ ગોળી ખાવ, કાને નથી સંભળાતુ તો આ ગોળી ખાવ, એમ પાંચ અવિદ્યાના પાંચ ઇલાજો પાંચ દવા. એની દવા છે – અવિદ્યાની દવા વિદ્યા જ હોઇ શકે. અને એ વિદ્યાનુ નામ છે વૈરાગ્યં, સાંખ્ય યોગોમ તપ, ભક્તિશ્ચ કેશવે.

આ પાંચ અવિદ્યાને દૂર કરવા માટે આપણને આપડા ધર્મ શાસ્ત્રો દવા આપે છે કે આપડી અવિદ્યા દૂર કેમ કરવી ? જેમ સૂરદાસજીએ માગ્યુ.

સૂરદાસકી સબે અવિદ્યા દૂર કરો નંદલાલ – અબ મૈં નાચ્યો બહુત ગોપાલ. પાંચ અવિદ્યાને દૂર કરવાની દવા ધર્મશાસ્ત્રો એ બતાવી જો આ પાંચ વિદ્યાનું પાલન કરવામાં આવે તો પાંચ અવિદ્યા દૂર થાય. એ કયા પાંચ ઇલાજો ? વૈરાગ્ય, સાંખ્ય, યોગ, તપ અને ભક્તિ.

હવે પ્રશ્ન એ આવે છે કે વૈરાગ્ય એટલે શુ ? સાંખ્ય એટલે શુ ? તપ એટલે શુ ? યોગ એટલે શુ ? યોગા-વૈરાગ્ય, સાંખ્ય, યોગ, તપ-અને સ્વરૂપની સ્મૃતિ તે ભક્તિ થી શક્ય છે. વિસ્મૃતિ દૂર કરવી અને સ્મૃતિ આપવી તે ભક્તિની શક્તિ છે.

સૌથી પહેલા વૈરાગ્ય છે. આ બધા મારા ને મારૂ તેની ખેંચતાણ એ મનમાંથી દૂર થઇ અતે ભગવાન શિવાય કોઇની અંદર ચિત્તનો અનુરાગ ન રહેવો એવી સ્થિતિ–

ક્રમશઃ

શ્રીવલ્લભનંદન ગોપીનાથ

यदनुग्रहतोजन्तुः सर्वदुःखातिगोभवेत् ।
तमऽहंसर्वदा वन्दे श्रीमद्वल्लभनन्दनम् ॥

શ્રીમતી જાગૃતિ ગોહિલ

જગદ્ગુરૂ શ્રીવિટ્ઠલનાથજી વિરચિત ભ્રાત વંદના

જગદ્ગુરૂ શ્રગોપીનાથજી પ્રભુચરણ

શ્રી ગોપીનાથજી પ્રભુચરણ નું નિર્ગુણ પુષ્ટિભકિત સંપ્રદાય માં અસાધારણ મહત્વ હોવા છત્તા તેમના વિષય માં પુષ્ટિ સંપ્રદાય ના લોકો માં જેટલી જાણકારી હોવી જોઈએ તેટલી જોવા મળતી નથી. તેમના જાણકાર પણ મોટાભાગે આપશ્રી ને શ્રી મહાપ્રભુજી ના જ્યેષ્ઠ પુત્ર ના રૂપ માં જાણે છે, સાંપ્રદાય ના આચાર્ય ના રૂપ માં નહી.

શ્રી ગોપીનાથજી વિધા અને વ્યવહાર માં ઘણા કુશળ હતા. આપશ્રી એ શ્રીમહાપ્રભુજીના નિર્દેશન અને દેખરેખ માં રહી ને પરંપરા અનુરાર વેદ-વેદાન્ત વગેરા શસ્ત્રો નું અધ્યયન કર્યું અને અણુભાષ્ય, સુબોધિની જેચા સાંપ્રદાયિક ગ્રંથો નું અધ્યયન પણ શ્રી મહાપ્રભુજી પાસે થી મેળવ્યું હતું.

'स्ववंशे स्थापिताशेषस्वमाहात्म्यः'

શ્રી મહાપ્રભુજીએ પોતાના વંશમાં સંપૂર્ણ માહત્મ્ય અને એશ્વર્ય નું સ્થાપન કર્યું છે. જો આપશ્રીએ પોતાના અશેષ મહાત્મ્ય નું સ્થાપન પોતાના વંશજ માં ના કર્યું હોત તો તે પુષ્ટિ-ભકિત નો પ્રચાર અને પ્રસાર કરવામાં સમર્થ ના થઇ શકતા. આ માટે શ્રીમહાપ્રભુજી એ સ્વયં શ્રી ગોપીનાથજી ને આચાર્યપદ પ્રદાન કરી સ્વયં ના અશેષ મહાત્મ્ય નું વંશજ માં સ્થાપન સિદ્ધ કર્યું હતું.

'आत्मा वे जायते पुत्रः'.......

આ પ્રમાણ થી જ શ્રી મહાપ્રભુજીએ સંપૂર્ણરૂપ થી પોતાના પુત્ર માં ચરિતાર્થ કરી પોતાની આત્મા ને જ પ્રાદુર્ભૂત કરી માહત્મ્ય સ્થાપિત કર્યું.

શ્રી ગોપીનાથજીએ નાની વય માં જ સાંપ્રદાય ની સંપૂર્ણ જવાદારી સાંભળી લીધી હતી. શ્રીમહાપ્રભુજીએ પુષ્ટિભકિત માર્ગ ના તત્વ સિદ્ધાંત અને ફળ પક્ષો ને સમજાવવા માટેના ઘણા ગ્રંથોની રચના કરી હતી,પરંતુ પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવોએ લૌકિક-વૈદિક કર્તવ્યો ને નિભાવવાની સાથે દૈનિક જીવનને કેવી રીતે સેવા-સત્સંગમય બનાવવી તેનું જ્ઞાન આપવા માટે કોઈ ગ્રંથ ની રચના કરી નહતી. આ અતિ મહત્વનું કાર્ય શ્રી ગોપીનાથજીએ 'સાધન દીપિકા' નામના સુંદર ગ્રંથ ની રચના દ્વારા કરી. આપશ્રી સંસ્કૃતના પ્રકાંડ વિધ્વાન હતા.આપે ઘણા ગ્રંથો ની રચના કરી હતી, જેમાંથી વર્તમાનકાલ માં કેવળ ત્રણ ગ્રંથો ઉપલબ્ધ મળે છે. 'સાધન દીપિકા' તેમનો એક ગ્રંથ છે . આ ગ્રંથમાં આપે પુષ્ટિમાર્ગ ના સાધન પક્ષ ને સ્પષ્ટ કર્યો છે. શ્રી મહાપ્રભુજીના ગ્રંથો ના આધાર પર, વિશેષ 'સર્વ નિર્ણય ગ્રંથ' નો આશ્રય લઈને પિતાના સિદ્ધાંત ની પ્રમાણિકતા અને શ્રી મહાપ્રભુજીની સંમતતા હોવાની પુષ્ટિ કરી છે, આ ગ્રંથ માં સાંપ્રદાયિક સેવા-પ્રણાલી અને સિદ્ધાંતોની ચર્ચા છે.અને સેવા દ્વારા પ્રભુ પ્રાપ્તિ, પ્રભુ દર્શન અને ભકિત કેવી રીતે પ્રાપ્ત થઇ શકે તેનું સુંદર નિરૂપણ છે.

'સાધન દીપિકા' પુષ્ટિ સાંપ્રદાય નો બહુજ મહતવન નો ગ્રંથ છે,આ ગ્રંથ ને પુષ્ટિમાર્ગ ની આચાર સંહિતા કહી શકાય. શ્રીનાથદ્વારા અને શ્રીવાલ્લાભ્કુલ ના નિજગૃહ માં પ્રણાલિકા આં ગ્રંથ ના આધારેજ ચાલી રહી છે.

શ્રી ગોપીનાથજી પોતાના સિદ્ધાંત પક્ષ અને વ્યવ્હાર પક્ષ માં આચાર્યપદ પર હોવા ને કારણે મર્યાદા અને પુષ્ટિ ભકિત, આમ બંને પક્ષ ના અધિકાર ના હિસાબે ભકતો ને ઉપદેશ આપતા હતા,

પણ આથી તેમને મર્યાદામાંર્ગીય આચાર્ય માનવું ખોટું છે. પૂર્ણાઅવતાર તેજ છે જે મર્યાદા માં પુષ્ટિકાર્ય અને પુષ્ટિમા મર્યાદા કાર્ય કરે. શ્રી ગોપીનાથજી ના અનુસંધાન માં સ્વયં શ્રી મહાપ્રભુજીએ કહ્યું છે કે આપ માં ઉભયપક્ષતા વિદ્દ્માન છે મર્યાદામાંગોપ્દેષ્ટતા અને પુષ્ટિમાંર્ગોપદેષ્ટતા તે ઉભયરૂપતા આચાર્ત્વ માં અપેક્ષિત હોય છે. જે કોઈ આપ પાસે જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરવા આવતા હતા તે હરેક પુષ્ટિ ભકિત ના અધિકારી નહિ હોવા ના કારણે શ્રી ગોપીનાથ્જીએ વિષ્ણુસ્વામી ની શિષ્ય પરમ્પરા અને શ્રી વલ્લભની પુષ્ટિ ભકિત ની ભગવદસેવા અને પ્રેમભકિતમય રૂપ માં વ્યવહાર પક્ષ, આમ બંને ના ઉપદેશ આપ્યા હતા.

આપશ્રી એ શ્રીવલ્લભ ના પ્રતીનીધી આચાર્યના રૂપ માં શ્રીવલ્લભ ના ગ્રંથોને જ પોતાના ગ્રંથો અને ઉપદેશ દ્વારા લોકો સુધી પહોચાડ્યા. અને નુતન સરળ સહજ દુખ રહિત પદ્ધતિ અને આનદ યુકત વ્યવસ્થા નું નિર્માણ એન ભારતીય ધર્મ દર્શન સંસ્કૃતિ અને કૃષ્ણ પ્રેમ નો જ પ્રચાર પ્રસાર કર્યો. આવા અત્યંત પ્રેરક ભકિતમય શ્રી વલ્લભ પ્રતિનિધિ, જેમને પોતાના જીવનકાલ ના પચાસ વર્ષ ને પુષ્ટિ સંપ્રદાય ના પાયા ને સુદ્રઢ કરવા માં વિતાવ્યા હોય તેવા આચાર્યવર્ય શ્રી ગોપીનાથજી ને સાંપ્રદાય ભુલાવે તો તે સાંપ્રદાય માટે દુર્ભાગ્ય નો વિષય છે.

यथार्थ मार्ग

प्रिय वैष्णव,
जय श्री कृष्ण,

श्री गोपीनाथ आध्यात्मिक संस्था द्वारा आत्म कल्याण हेत धर्म के यथार्थ ज्ञान को आप तक पहुचाने के लिए यह उत्तम मासिक प्रत्रिका यथार्थ मार्ग का शुभारंभ प्रभु कृपा से जनवरी माह में हुआ है। जैसे गुरूजी द्वारा आप सभी को निःशुल्क वितरण तीन माह करने का वचन दिया गया था उसको पूर्ण करने संस्था ने गुरूजी की आज्ञा अनुसार, जनवरी से आर्शीवाद रूप निःशुल्क वितरण किया है । विश्वास है सब ने उसका पूर्ण लाभ लिया होगा । पत्रिका के तीन मास मार्च में पूर्ण हो रहे हैं पर १ माह और बढा दिया है, अतः आपको अप्रेल की मासिक पत्रिका भी निःशुल्क प्राप्त होगी । इसके आगे मई माह से यह सहज यर्थाथ ज्ञान प्राप्त करने के लिए और हम से जुडे रहने के लिए जल्द से जल्द आप मेंबर बनें और बहुत ही साधारण से धन का व्यय करके ज्ञान -भक्ति के भण्डार समान यह मासिक पत्रिका अपने घर पर ही प्राप्त करें । हमें उम्मीद है, स्वधर्म एवं आत्मधर्म को समझकर उसको अपनी जीवनशैली का हिस्सा बनाकर सहज धर्मशील जीवन जीने के लिए आप सब हमसे जुडेंगे । प्रतिमाह २०/- की पत्रिका, एक वर्ष की सदस्यता पर २ माह की अतिरिक्त मिलेगी, ५ वर्ष की सदस्यता पर १७ माह की अतिरिक्त मिलेगी और भी कई विकल्प संलग्न फार्म में है, जिसे आवश्यकता अनुसार चुन सकते हैं । हमसे जुडने के लिए आपसे नम्र अनुरोध है कि नीचे दिए गए पते पर या फोन नंबर पर संपर्क करने की कृपा करे ।

आज्ञानुसार
श्रीगोपीनाथ आध्यात्मिक संस्थान
यथार्थ मार्ग मासिक पत्रिका के
संपादक एवं ट्रस्टी

Payment method

चेक / ड्राफ्ट **श्री गोपीनाथ आध्यात्मिक संस्थान** के नाम पर बनाए और आपको दिये गये फॉर्म पे जो पता लिखा है उसपे भेजें । या I.D.B.I. बैंक की किसी भी शाखा में श्री गोपीनाथ आध्यात्मिक संस्थान के **I.D.B.I. Bank's Saving A/c No. 289104000033974** में जमा करवा सकते हें.

नकद भुगतान के लिए कृपया अपने स्थानीव संपर्क व्यक्ति को फोन करें जीनके नंबर नीचे दिये गये हें ।

Vadodara - Gunjan Shastri-9374065710
Sampadak-Satna - Kalpana Katare- 6261084284
Burhanpur - Nitinbhai Patil-8989520502
Junaghad - Bhaveshbhai - 7984025185
Bombay- Apurva Kadakia -80970 47471

Divine Thoughts

SEVA

Pujya Shri Brijlata Bahuji

Right from the last issue we have been thinking over the term 'serva'. We have already considered the difference between seva and Puja and thought over the inevitability of seva, surrender and dedication. We have shown that 'seva' means service of Bhagavan. How can this be done? The reply to this question had been reserved to this issue, as clarified in the last issue.

When we determine the meaning of seva as " serving" the answers to certain questions become necessary for its interpretation:-

(1). Whom to serve?

(2). What is the form of seva ?

(3). How to perform the seva? and

(4). What is to be achieved by seva ?

We shall answer these four questions, explained by Shree Vallabhacharyaji. As an answer to this first question :- He says:

'Krishna- seva sada karya'

(Service of *Bhagavan* Shree Krishna should be done always). They regarding the form of seva he clarifies, 'Mansi sa para mata,....chetastatpravanam seva' (Mansi that in which mind is associated: performed by the mind), it is called Para seva. This type of seva signifies the mind's being always join with *Bhagavan*. (i). Absorption solely in *Bhagavan* Shree Krishna of the mind together with life. (ii). 'I' ness, intellect, body and senses of a jiva who is a part of *Bhagavan* and (iii). One's dedication to Him. : This is Seva. Whom to serve?

Bhagavan Shree Krishna should be served. Krishna does not mean any ordinary worldly person. He is also not a deity or a partial incarnation ; but He is *Parabrahman* Paramatman, Shree Krishna Who has created animate and inanimate beings of the world, who nourishes and works for the growth of all the created beings and in Whom all these get dissolved. He is beyond the Prakriti (matter) and He is the highest final power. This *Bhagavan* Shree Krishna should be served.

What is the form of seva ? regarding this it has been stated that the consciousness along with all the senses and mind being united with paramatman Shree Krishna is the form of seva . As long as our mind , intellect etc. have emotions , like I and mine , so long bhagavan can not be served with such mind and intellect. All such emotions constitute what is called "samsara", the worldly existence. A jivatman[an individual soul] experiences pleasure and pain due to all such emotions. Bhagavan transcends the worldly existence. He is beyond the dualities like pleasure and pain etc. and his form is that of bliss. As long as a jiva continues in the worldly existence he aspires so long to get worldly things he goes on repeating frequently to himself that he wants this and that, every now and then he counts benefit and loss always in his life from his kith and kins and from all his other associations. He loves them and maintains relations with them by whom he is benefitted and gives importance to them. A father believes that he has done so much for his son and asks himself. What the son has done for him? A wife believes that she has renounced so much for her husband and asks herself. What has he given up for her sake?

......contd.....

श्री गोपीनाथ आध्यात्मिक संस्थान

Visit us at www.gopinathji.org

यथार्थ संपादक मंडल

श्रीमती प्रभाबेन शास्त्री

श्रीमती कल्पना कटारे

कु. निमिषा बेन पारेख

यथार्थ व्यवस्थापक मंडल

श्रीमती गुंजनबेन शास्त्री

श्री उमेश भाई वैष्णव

संस्थान के कार्यकलाप

- यथार्थ मार्ग (मासिक पत्रिका)
- ओडियो प्रवचन केसेट, पुस्तक प्रकाशन, और वितरण
- गौसेवा
- अशक्त आर्थिक तकलीफ वाले व्यक्तियों की सहायता
- सामान्य स्थिति वाले छात्रों को मदद्
- सत्संग सत्रो का आयोजन

अशक्त, आर्थिक तकलीफ वाले, अनाथ एवं ब्राह्मण हेतु

- भोजन सेवा ● वस्त्र सेवा ● विद्या दान
- औषधि सेवा ● अन्न दान ● अनन्त योजना

वड़ोदरा कार्यालय का समय
(सुबह ११ से शाम ५)

सम्पर्क – मोबाईल
98255 13317, 9998107541

ट्रस्ट र.नं. (ई–४३७५(मेहसाणा) ता. १६ मार्च २००५)
इन्कमटेक्स करमुक्ति का लाभ भी उपलब्ध है
CIT/GNR/80G(5)/PTN-37/07-08/3233/12-13

बृजलता शर्मा के अहमदाबाद से सभी को जय श्रीकृष्ण

सुमित्रा देवी शर्मा के राजस्थान से सभी को जय श्रीकृष्ण

व्रतोत्सव टीप्पणी माह मै

તા.	વાર	તિથિ	વિગત
વૈશાખ વદ			
૧૧	શુક્ર	૧૧	અપરા એકાદશી વ્રત.
૧૪	સોમ	૧૪	સૂર્ય વૃષભમાં ક. ૨૯.૦૪ થી
૧૫	મંગળ	૩૦	દર્શ-ભાવુકા અમાવાસ્યા, અન્વાધાન, સંક્રાન્તિ પુણ્યકાલ સૂર્યોદય થી ક. ૧૨-૩૫, ગ્રીષ્મ ઋતુ આરંભ.
અધિક જેઠ સુદ			
૧૬	બુધ	૧	ઇષ્ટિ, પુરુષોત્તમ માસ પ્રારંભ.
૨૫	શુક્ર	૧૧	કમલા એકાદશી વ્રત, સૂર્ય રોહીણીમાં ક. ૧૪-૨૨ થી આજથી લઇને અધિક જેઠ વદ - ૮ પર્યન્ત શ્રી પ્રભુને વિશેષત: શીતોપચાર કરવા.
૨૯	મંગળ	૧૫	મન્વાદિ, અન્વાધાન.
અધિક જેઠ વદ			
૩૦	બુધ	૧	ઇષ્ટિ.

साभार-वल्लभ विट्ठल ग्रंथ प्रकाशन मंडल ट्रस्ट

The Loyalty of Shravana

- Jagruti Gohil

Once upon a time, there lived a boy named Shravan Kumar. Shravana was a poor teenage boy helping his parents. since they could not see, Shravan took great care and did everything for his mother and father. He took them on a pilgrimage to all the religious sites in India. As they were old and blind, he was carrying them in two baskets slung over his shoulders. They were on a pilgrimage and wanted to eat simple food offered only by their son.

While on a pilgrimage they arrived in a forest near Ayodhya. His parents were thirsty and requested Shravan to get water to quench their thirst. Shravan Kumar took a vessel to fetch water from the river Sarayu. He left his parents and went to the banks of the river.

Dashrath was the king of Ayodhya and he was fond of hunting. He had come to the forest alone to hunt. He had a unique skill of shooting a mark with his arrow from where he heard the sound. As soon as Shravan Kumar dipped the vessel to fill water,

Dashrath thought it was the sound of a deer drinking water. He received the arrow precisely, aiming at the place from where the sound came. Shravana is hit by a wayward arrow shot by Prince Dasharatha and dies. Even with his dying breath, he begs Dasharatha to carry water to his thirsty parents.

The moral lesson - One should be the embodiment of kindness and loyalty and should take care of their parents with the virtues of compassion, just like Shravan.

PUZZLE - Hinduism

-Trupti Abrol

Find the words from the list in the below box :

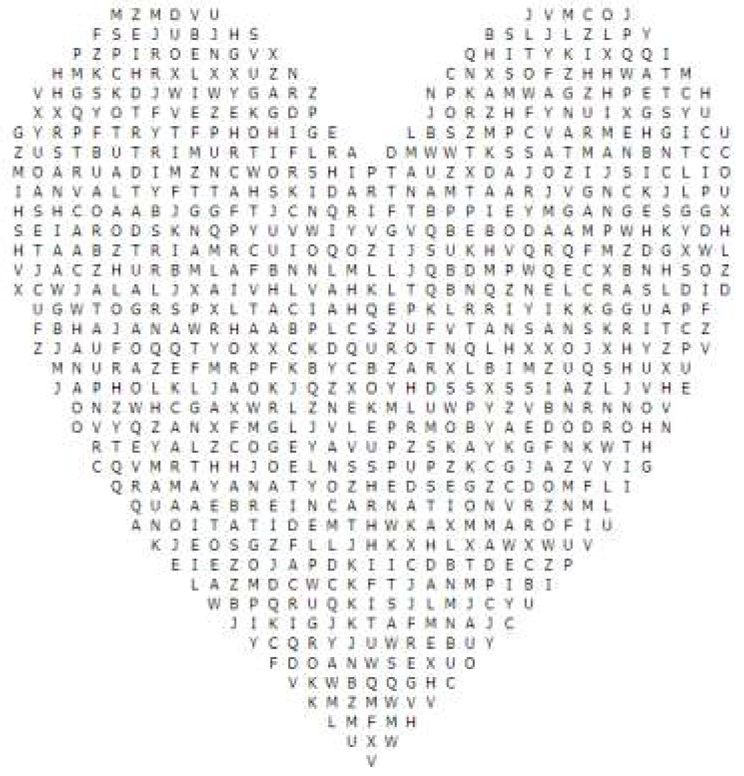

AARATI	KARMA	SANSKRIT
ATMAN	MAHABHARAT	SARSWATI
BELIEF	MANTRA	SWASTIK
BHAJAN	DIKSHA	TILAK
BRAHMIN	MEDITATION	TRIMURTI
DARSHAN	RAMAYANA	TULASIMALA
GANGES	REINCARNATION	WORSHIP

Answer to the last time Puzzle - **Dharm**

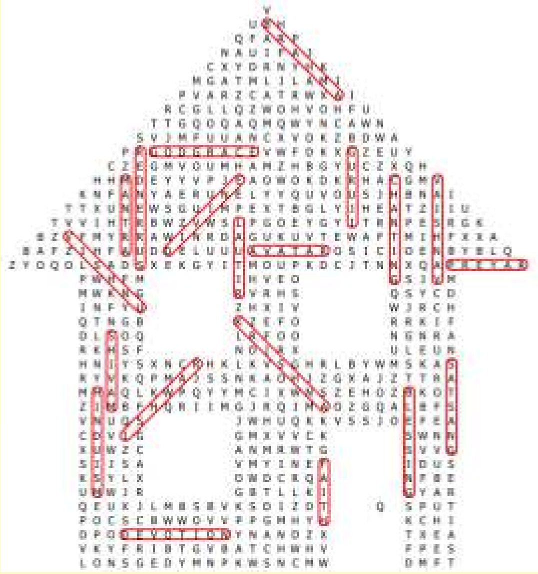

Manners

MATCH THE QUESTIONS WITH CORRECT ANSWERS

1. When you receive something you say?	*Are you ok?*
2. When you ask for something you say?	*Sharing!*
3. When you make someone else upset or sad, you say?	*Thank you!*
4. When you meet someone you say?	*Excuse me!*
5. If your parents ask you to do something, you show them what?	*Please*
6. Letting someone use something, you are using is called?	*I am sorry!*
7. If you see someone upset, you ask?	*Respect*
8. What should you say if you walk in front of someone?	*Nice to meet you!*

संस्कार

परिवार पर इंटरनेट का प्रभाव

श्री वृजेशकुमारजी शास्त्री

गतांक से आगे...

इसके परिणाम रुप कोई भी अनजान आप के बारे में जानकारी आसानी से प्राप्त कर सकता है । इंटरनेट के माध्यम से प्रेमालाप शुरू होते है, जहाँ कोई भी अपनी पहचान छुपा सकता है । और इस वजह से इंटरनेट द्वारा प्रेमालाप में बातचीत का स्तर भी बहुत जल्द आगे बढ जाता है । और फिर एसी बुनियाद पर रची हुई शादी का अंजाम भी करुण बन जाता है । ऐसी शादी में बडे प्रतिशत में असफलता मिलती है, क्योंकि एसे सोश्यल मीडिया के जरिए बने रिश्तों में ना ही हमे सामने वाले व्यक्ति का स्वभाव का परिचय मिलता है, ना ही सामाजिक स्तर की पहचान की कोई जानकारी प्राप्त होती है । सामने वाले पात्र के घर-परिवार उनकी आर्थिक, सामाजिक और बौद्धिक क्षमता को जाने परखे बिना जब शादी बंधन में जुडते हैं, तब अंजाम बहुत हद तक भयानक से ही आते हैं । ऐसा ही दूसरा शादी करने का तरीका है शादी.कोम जैसी वेबसाइट से शादी का । हमे ये सुविधा अच्छी लगती है, क्योंकि इसके जरिए हम दूर दूर तक से रिश्ते तलाश कर सकते है । ज्यादा पसंदगी का लाभ है इसमें । विजातीय वर्ग की शादी भी ज्यादा होने लगी है इसके कारण ऐसी विजातीय शादी को सफल बनाना आसान नही, वो भी तब जब युवाओं में let go का भाव खत्म होने में यहा social media और नेट ही कारण भूत है । अब एसी विजातीय वर्ग की शादी में जीवन शैली, खान-पान, बोली, त्योहार और जीवन के कई स्तर पर भिन्नताएं होती हैं । जिसमे शादी के बाद आज की भागती जिंदगी में सामंजस्य लाना आसान नही होता । हमारी संस्कृति-परम्परा में जो प्रथा थी शादी माता-पिता द्वारा कराने की, उसके कुछ खास कारण थे । जाति, खानदान की पहचान, सामाजिक स्तर सब पहले देखते थे ताकि परिवार को जानकारी प्राप्त हो सके क्योंकि जहाँ शादी कर रहे उस परिवार के संस्कार शादी के रिश्तों में अति महत्व के होते है वही संस्कार आने वाली पीढी की बुनियाद होती है ।

भले ही आज के युवाओ के लिए इंटरनेट रिलेशनशिप मूल मंत्र हो गया हो पर आज के आधुनिक जीवन के विकृत परिणाम से बच्चों को आगाह करना हमारी जिम्मेवारी है । बिना विवेक से इंटरनेट का उपयोग कैंसर से कम नही है। और इस बात का ध्यान माता-पिता को रखना होगा। स्वयं को इंटरनेट के उपयोग पर संयम रखना होगा, जिससे बच्चों को प्रेरित कर सकें ।

जिस घर में माँ-बाप इंटरनेट, social media के उपयोग में संयम नहीं रखते वहाँ मन, और बुद्धि बिगडती है, बच्चों का अभ्यास बिगडता है, घर के कार्य में रुकावट, कलह बढती है । कभी कभी इस कारण एक दुसरे को वक्त न दे पाने पर भी रिश्तो में दूरियाँ आती है । जो विकृत परिणाम में परिणीत होती है । और इनटरनेट पर न देखने वाले विषयो का Website भी सहजता से प्राप्त होती है और एक बाल मानस विकृती की और आगे बढते हुए भयंकर अपराधों को करने से भी हिचकिचाता नहीं । अतः सावधान....

इससे अच्छा घर परिवार के सदस्यों के साथ मिल कर एक दूसरे के बीच प्रेम बंधन बना रहे, परिवार को नष्ट करने वाले माध्यमों से बचाने हेतु और घर को तीर्थ और घर के सदस्यो को वैष्णव बनाने के लिए घर में आध्यात्म, संस्कृति और संस्कार बढाने वाले सत्संग के लिए समय निकालना आवश्यक है ।

उत्सव

पुरुषोत्तम मास का महत्व

सुनीता शाह

भगवान विष्णु के वरदान से अधिक मास या मल मास को पुरुषोत्तम मास कहा जाता है। पुरुषोत्तम प्रभु इस मास के स्वामी हैं। इस कारण प्रभु के सभी दिव्य गुण इस में समाविष्ट हैं। पंचांग के अनुसार सारे तिथि-वार, योग-कारण, नक्षत्र के अलावा सभी मास के कोई न कोई देवता स्वामी हैं, किंतु पुरुषोत्तम मास का कोई देव स्वामी न होने के कारण सभी मंगल कार्य, शुभ और पितृ कार्य इस में वर्जित माने जाते हैं। पर क्यों कि मास के स्वामी स्वयं प्रभु पुरुषोत्तम हैं, शास्त्रों में बताया गया है कि इस माह में व्रत-उपवास, दान-पूजा, यज्ञ-हवन और ध्यान कर ने से मनुष्य के सारे पाप कर्मों का क्षय होकर उन्हें कई गुना पुण्य फल प्राप्त होता है। इस माह आपके द्वारा दान दिया गया एक रुपया भी आपको सौ गुना फल देता है। इसलिए अधिक मास के महत्व को ध्यान में रखकर इस माह दान देने का बहुत महत्व है। इस माह भागवत कथा, श्री रामकथा श्रवण पर विशेष ध्यान दिया जाता है। धार्मिक तीर्थ स्थलों पर स्नान करने से आपको मोक्ष की प्राप्ति और अनंत पुण्यों की प्राप्ति होती है। अधिक मास अपने आप में कुछ भी नहीं पर सब कुछ सुधारता है, अधिक मास की अपनी पहचान नहीं है, लेकिन यह अन्य सभी महीनों और वर्षो की पहचान को बेहतर बनाता है। मर्यादा मार्गीय को अपने कर्म को सुधारना और उचित कर्म करना चाहिए। एक भी अच्छा कर्म उसे मोक्ष के पास ले जाएगा। जब हम दान करते हैं, हम अच्छा महसूस करते हैं, हम खुश महसूस करते हैं इसलिए आप न केवल इस अधिनियम से खुद को खुश करेंगे,बल्कि अपने आसपास के लोगों के जीवन में सुधार भी करेंगे। उपवास ना केवल शरीर को शुद्ध करता है, अपितु उपरोक्त दो गतिविधियों को करने के लिए आपको अधिक समय भी देता है। उपवास आपको एक ही समय मेंअधिक सकारात्मक चीजों को करने के लिए अधिक ऊर्जा प्रदान करता है। इस लिए उपवास भी अपने आपको सुधारने का एक बहुत ही महत्व पूर्ण पहलू है। इस तरह शास्त्र में बताए हुए सब साधन प्रभु प्राप्ति के लिए आवश्यक तो हैं,परंतु पुष्टि भक्ति मार्ग थोडा अलग है। अगर वह साधन प्रभु सेवा रहित हो रहे हैं, तो वह सभी साधन भक्ति मार्ग में व्यर्थ हैं।

हालां कि मर्यादा जीव का उद्देश्य मोक्ष के माध्यम से जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त होने के लिए है, परन्तु पुष्टि जीव का मोक्ष अपने जीवन में प्रभु और संत सेवा से प्राप्त संतुष्टि में है। इस विचार से श्रीमहाप्रभुजी ने प्रभू स्वरूप सेवा का समावेश पुष्टि भक्ति मार्ग में किया हैं। और शास्त्र में बताए हुए सभी साधन का समावेश भी प्रभु सेवा के अंतर्गत किया है।

ज्ञान :- प्रभु के दिव्य स्वरूप,प्रभु के गुण, प्रभु की लीलाओं का ज्ञान ही एक भक्त के लिए सच्चा ज्ञान है।

योग/ध्यान :- प्रभु में अपना मन लगा कर प्रभु की सेवा करने से भक्त का ध्यान सिद्ध होता है।

जप :- प्रभु सेवा के समय में और अनवसर में प्रभु के स्वरूप, गुण, लीला, नाम का स्मरण- कीर्तन ही भक्त का जप है।

त्याग :- असमर्पित भोग, अन्याश्रय और दु:संग का त्याग ही भक्त के लिए सच्चा त्याग है।

तप:- असद् वाणी, विचार, व्यवहार पर संयम और आधि दैविक दु:ख (विरह..) को सहना ही भक्त का तप है।

व्रत-उपवास :- असमर्पित भोग का आजीवन त्याग, एकादशी और सभी जयंती में प्रभुको उत्तम भोग समर्पित कर प्रभु की प्रसन्नता हेतु उसे ग्रहण कर प्रभु सेवा, स्मरण, कीर्तन करना ही वैष्णव का व्रत-उपवास है। ..एसे सभी शास्त्र के बताए साधन-साधना का समावेश श्रीमहाप्रभुजी ने अपने मार्ग के साधना प्रणाली 'स्वरूप सेवा' में किया है।

अधिक मास सभी के लिए आध्यात्मिक सफाई का एक महीना है, लेकिन कृष्ण भक्तों के लिए, हमारे श्रीकृष्ण को मनाने के लिए सिर्फ एक और बहाना है!

विना आरोग्यं वृथा लक्ष्मी:

जीवन में ऋतुअनुकुल परिर्वतन एवं सावधानियाँ
और पथ्यात्मक युक्त आहार स्वास्थ्य की कुंजी है ।

डा. शैलेन्द्र जी

स्वास्थ्य का रहस्य...

रोगों के उपचार की अपेक्षा रोगों से बचना अधिक श्रेयस्कर है। यदि हम प्रयास करें और स्वस्थ्य संबंधी कुछ आवश्यक नियमों की जानकारी प्राप्त करके उनका नियम पूर्वक पालन करें तो अनेक रोगों से बचकर प्राय: जीवन पर्यत स्वस्थ रह सकते हैं।

सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है कि स्वस्थ कौन है? वास्तव में मनुष्य के स्वस्थ रहने का अर्थ यह है कि उसके शरीर के सभी अंग पूर्ण और अपने अपने कार्य का निर्वाह करने में समर्थ हों, शरीर न अधिक स्थूल हो न अधिक दुर्बल तथा मन एवं मस्तिष्क पर पूर्ण अधिकार हो। स्वस्थ रहने के लिए शरीर एवं मन दोनों का स्वस्थ होना अनिवार्य है। यदि आपका शरीर हृष्ट पुष्ट है किन्तु मन दुर्बल, अस्वस्थ एवं रोगी है तो ऐसा शारीरिक स्वास्थ्य किसी भी कार्य के लिए उपयोगी नहीं है। मन की प्रेरणा से ही शरीर को कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। अस्वस्थ मन द्वारा किया गया कार्य कभी भी सुचारु रूप से पूर्ण नहीं हो सकता। इसी प्रकार यदि मन स्वस्थ है और शरीर दुर्बल- अस्वस्थ तो मन द्वारा प्रेरित कार्य को शरीर की दुर्बलता निष्क्रिय बना देगी। अत: पूर्ण स्वास्थ्य के लिए मन और तन दोनों का स्वस्थ होना अत्यावश्यक है।

स्वास्थ्य की रक्षा कैसे हो? मानव शरीर ईश्वर द्वारा निमित एक ऐसा जटिल तथा स्वचलित यंत्र है, जिसमें एक ही समय में विभिन्न अंग विभिन्न कार्यो का संपादन करते हैं। यदि हम इस यंत्र के रख-रखाव पर ध्यान नहीं देंगे तो क्या होगा? इसकी कार्य क्षमता समय व्यतित होते हर क्षण के साथ कम होती जायेगी, हमारा स्वास्थ्य हमसे छिन जायेगा और शरीर रोगालय बनकर रह जायेगा। अत: आवश्यक है कि इसे सही ढंग से कार्य करने की स्थिति में रखने के लिए प्रयत्न करें। निरोग एवं स्वस्थ रहने के लिए निम्नलिखित नियमों का पालन करना चाहिए--

१) सामर्थ्य अनुसार व्यायाम करें।
२) भरपूर निद्रा लें तथा आराम करें।
३) सामयिक (मौसम के अनुकूल) वस्त्रों को धारण करें।
४) उठने-बैठने की उचित मुद्रा अपनायें।
५) शरीर को साफ और स्वक्छ रखें।
६) यथोचित मात्रा में पोष्टिक भोजन ग्रहण करें।
७) असत् स्वभाव के अभ्यास से वंचित रहें।
८) तनाव मुक्त रहें।
९) शरीर की मालिश नियमित करें।
१०) सप्ताह में एक बार उपवास अवश्य करें।

क्रमश:

खुला प्रश्न मंच

राधिका दवे

प्र-१ हिन्दू धर्म को वैदिककाल में किस नाम से जाना जाता था जो आज इसका प्रर्याय बना हुआ है ?
उ हिन्दू धर्म को वैदिककाल में सनातन धर्म कहा जाता था ।
प्र-२ सनातन का क्या अर्थ होता है ?
उ शाश्वत या सदा बने रहने वाला सत्य ।
प्र-३ हिन्दू धर्म के मुख्य धर्मग्रन्थ चार वेद कौन कौन से है ?
उ १) ऋग्वेद २) सामवेद ३) अथर्ववेद ४) यर्जुवेद ।
प्र-४ ऋग्वेद में कितने देवो का उल्लेख मिलता है ?
उ इसमें ३३ देवो का उल्लेख किया गया है।
प्र-५ ऋग्वेद में मिलने वाला सब से पहला मंत्र कौन सा है ?
उ ऋग्वेद में सर्व प्रथम गायत्री मंत्र है ।
प्र-६ यजुर्वेद को कितने अध्यायों में बाटा गया है ?
उ यजुर्वेद में ४० अध्यायों में बाटा गया है ।
प्र-७ प्रमुख स्मृति ग्रंथ कितने है ?
उ प्रमुख स्मृति ग्रन्थ १८ माने गये है ।
प्र-८ १८ स्मृति ग्रंथो के नाम क्या है ?
उ मनु, याज्ञवल्क्य, पराशर, आपस्तंब, नारद, अत्रि, विष्णु, हरित, औषनासी, अंगिरा, उशनस, यम, कात्यायन, उमव्रत, बृहस्पति, व्यास, दक्ष, गौतम, वशिष्ट, संवर्त, शंख, गार्गेय, देवल, शरतातय और शातातप स्मृति ।
प्र-९ पुराण और उप्पुराण की संख्या कितनी है ?
उ १८ पुराण और २२ उप्पुराण है ।
प्र-१० सनातन हिन्दु धर्म के मुख्य पांच संप्रदाय के नाम क्या है ?
उ १) वैष्णव, २) शैव, ३) शाक्त, ४) गाणपत्य, ५) सौर।
प्र-११ पांच संप्रदाय के आराध्य देव कौन कौन से है ?
उ गाणपत्य - गणेशजी, वैष्णव - विष्णुजी, शैव - शिवजी, शाक्त - शक्तिजी और सौर सम्प्रदाय के अनुयायी सूर्य की पूजा आराधना किया करते है।
प्र-१२ चतुर्युग के नाम क्या है ?
उ सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग और कलियुग ।
प्र-१३ रामायण और महाभारत को किस युग का माना गया है ?
उ रामायण को त्रेतायुग और महाभारत को द्वापर युग में माना गया है ।
प्र-१४ वैवस्वत मनु के काल में जन्में सात महान‌ऋषियों के नाम क्या है ?
उ महान सप्तऋषि के नाम इस प्रकार है -
१) वशिष्ठ, २) विश्वामित्र, ३) कण्व, ४) भारद्वाज, ५) अत्रि, ६) वामदाव, ७) शौनकऋषि ।
प्र-१५ देवताओ और दानवो के मुख्य गुरु कौन है ?
उ देवताओं के गुरु बृहस्पति है और दानवों के गुरु शुक्राचार्य माने जाते है।

जगद्‌गुरू महाप्रभु श्रीमद् वल्लभाचार्य चरण के ५४१वां प्राकट्य वर्ष मनाने के उपलक्ष्य में पुष्टिमार्गिय आनंदोत्सव समारोह का तीन दिवसीय उत्सव श्रीगोपीनाथ आध्यात्मिक संस्थान और ग्वाल मंडल (उत्सव समिति) के द्वारा पूज्य श्री गिरिराजजी शास्त्रीजी के प्रयास और मनोरथ रूप आयोजन पू. पा. षष्ठीधाश्वर गोस्वामी १०८ श्री द्वारकेशलालजी, पू. पा. श्री आश्रयकुमारजी महोदयश्री, पू. पा. श्री व्रजेशकुमार जी शास्त्रीजी की संन्निधि में हुआ ।

बेल्जियम और स्वीडन में शिविर और सत्संग संध्या आयोजित, युरोप यात्रा के समय में श्री गुरूजी ने धर्म प्रचार कर वैष्णवों को भक्ति और सहज जीवन के लिऐ जागरूक किया ।

BOOK POST PRINTED MATTER

Printed & Published By Giriraj V. Shastri On Behalf Of Owner Shree Gopinath Adhyatmik Sansthan Trust (regd. No. E4375) And Printed At Shraddha Screen Printing, C/o Dharmit D. Parikh, 1930, Pitta Ni Pole, Opp. Govardhannathji Temple, Sarangpur Chakala, Sarangpur, Ahmedabad-380001 And Published At Giriraj V. Shastri , E/294, Rajlakshmi Society, Opp. Baroda Heart Institue,Old Padra Road, Vadodara-390027. Editor Giriraj V. Shastri